43

वह बड़ा भरमाने वाला

(13:11-18)

मसीही लोगों को नाश करने का शैतान का एक ढंग धमकी है, जबकि दूसरा ढंग *भरमाना* है। अध्याय 12 में अजगर को ''शैतान ... सारे संसार का *भरमाने वाला*'' कहा गया है (आयत 9)।[1] अदन की वाटिका में शैतान (सर्प) ने हव्वा को भरमाया था (उत्पत्ति 3:13) और तभी से वह मनुष्यजाति को भरमाता आ रहा है। पौलुस ने लिखा है, ''परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से, जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किए जाएं'' (2 कुरिन्थियों 11:3)। बाइबल मसीही लोगों को चौकस करती रहती है कि ''धोखा न खाओ'' (1 कुरिन्थियों 6:9; 15:33; गलातियों 6:7; याकूब 1:16; देखें व्यवस्थाविवरण 11:16)।

हमारा पिछला पाठ अजगर के धमकाने के माध्यम से अर्थात समुद्र से निकलने वाले पशु के विषय में था (13:1-10)। यह पाठ अजगर के भरमाने वाले माध्यम अर्थात पृथ्वी से निकलने वाले पशु पर है (13:11-18)। आयत 14 कहती है कि यह दूसरा पशु ''पृथ्वी के रहने वालों को भरमाता'' है।[2] वचन में उन कुछ ढंगों का पता चलेगा, जिनसे शैतान हमें भरमाने की कोशिश करता है। इससे हमें यह भी पता चलेगा कि यदि हम प्रभु पर अपने मन लगाए रखें तो वह हमें भरमा नहीं सकता।

वह जो नहीं है वह दिखाई देता है (13:11, 12, 14-17)

यूहन्ना ने कहा, ''फिर मैंने एक और पशु को पृथ्वी में से निकलते हुए देखा''[3] (आयत 11क)। यूहन्ना ने शायद कुछ ऐसा देखा:[4] अजगर के समुद्र से निकलने वाले पशु का स्वागत करने पर आस-पास की भूमि कांपने लगी। पृथ्वी पर दरारें पड़ गईं और धूल उड़ने लगी। एक खेत में भूमि सिकुड़कर ऊपर की ओर उभर आई। कोई उस भूमि से लड़ रहा था, जो शक्तिशाली और बलवान थी। भूमि में से कैसा जन्तु निकल रहा था?

वह कैसा था

अन्त में उस जन्तु के सामने आने पर, वह आश्चर्यजनक ढंग से हानि रहित, बल्कि निर्दोष सा लगा: ''उसके मेमने के से दो सींग थे'' (आयत 11ख)। और कोई विवरण नहीं दिया गया है, परन्तु ऐसा माना जाता है कि उसका रूप मेमने जैसा था।[5] सींगों का सांकेतिक

अर्थ शक्ति है, परन्तु इससे भी उस पशु के हानि रहित व्यवहार से ध्यान नहीं हटा, क्योंकि वे ''मेमने के सींगों जैसे'' अर्थात ऊन में से थोड़ा सा बाहर निकली छोटी-छोटी हड्डीनुमा गांठें थीं।[6]

परन्तु जब उस पशु ने अपना मुंह खोला तो यह स्पष्ट हो गया कि उसका रूप भरमाने वाला था: ''और वह *अजगर* की नाईं बोलता था'' (आयत 11ग)। यीशु ने अपने चेलों को भेड़ के रूप में आने वाले भेड़ियों से चौकस रहने के लिए कहा था (मत्ती 7:15); अब यूहन्ना ने मेमने के रूप में आने वाले अजगर के सम्बन्ध में अपने पाठकों को सतर्क किया।

उसके ''अजगर की नाईं बोलने'' के कारण कुछ लोग यह सोचते हैं कि अर्धमेमना गुर्राया। मेरा अनुमान यह है कि वह फुफकारा होगा, जैसे ''वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है'' (प्रकाशितवाक्य 12:9)।[7] मेरे दिमाग में किसी धार्मिक अध्ययन कलाकार का कायल करने वाला बकवास सुनाई देता है।

मैं'' *धार्मिक* अध्ययन कलाकार'' कहता हूं, क्योंकि प्रकाशितवाक्य में कई और जगह पृथ्वी में से निकलने वाले उस पशु को ''झूठा भविष्यवक्ता'' कहा गया है (16:13; 19:20; 20:10); उसका स्वर धर्म है। उसका मुख्य कार्य लोगों से पहले वाले पशु की पूजा करवाना था (आयत 12)। हमने पहले पशु को ''मसीही विरोधी राजनैतिक शक्ति'' नाम दिया था। इस दूसरे पशु को हम ''मसीही विरोधी धार्मिक शक्ति'' कह सकते हैं।

हम में से उन लोगों के लिए, जिनका पालन-पोषण वहां हुआ जहां कलीसिया और राज्य को अलग-अलग माना जाता है,[8] शैतान की राजनैतिक शक्ति और धार्मिक शक्ति के विचार को साथ-साथ रखना अजीब लग सकता है। दूसरी ओर, इस पाठ का अध्ययन करने वाले कुछ लोगों के लिए यह नई बात नहीं होगी। संसार भर में यथास्थिति बनाए रखने के लिए कई राजनैतिक तथा धार्मिक प्रबन्धों ने हाथ मिला लिए हैं।

पृथ्वी पर से निकलने वाले पशु की मुख्य विशेषता यह है कि *वह ''वह ''था नहीं जो दिखाई देता था*। किसी भी नकल को निकट से मिलाने पर पता चलता है कि वह जिसकी नकल होता है, उससे कदापि मेल नहीं खाता। इस कारण यह जीव बाहर से तो मेमना ही लगता था, लेकिन वास्तव में वह मेमने का उलटा था। उसमें हानि रहित या निर्दोष होने वाली कोई बात नहीं थी:

(1) ''यह उस पहिले पशु का सारा अधिकार उसके साम्हने काम में लाता था''[9] (आयत 12क)। पहले पशु को ''हर एक कुल, और लोग, और भाषा, और जाति पर'' (13:7) अजगर की शक्ति दी गई थी (13:2, 4), इस कारण यह सबसे प्रभावशाली अधिकार था!

(2) दूसरे पशु को विशेषकर ''पृथ्वी और उसके रहने वालों से उस पहिले पशु की जिसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया था''[11] (आयत 12ख) शक्ति दी गई थी। इसमें ''पृथ्वी के रहने वालों को इस प्रकार भरमाना कि पृथ्वी के रहने वालों से कहे, कि जिस पशु को तलवार लगी थी, वह जी गया है, उसकी मूरत बनाओ''[12] शामिल था (आयत 14ख)। उसने लोगों को पशु की पूजा (आयत 12) और ''पशु की मूरत की पूजा'' करने

को भी विवश किया (आयत 15ख)।

(3) अन्त में उसे पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करने से इनकार करने वाले सब लोगों को दण्ड देने का अधिकार था। एक ढंग आर्थिक दबाव था। मूर्ति की पूजा करने वालों ''के दाहिने हाथ या उन के माथे पर एक-एक छाप करा दी'' गई (आयत 16ख) और इस पर छपा था ''कि उसे छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो, और कोई लेन-देन न कर सके'' (आयत 17)। ''यदि किसी को लेन-देन करने से मना किया गया [था] तो वह निकाला हुआ [बन गया] जो सामाजिक जीवन में भाग नहीं ले सकता था।''[13] उसकी अगुआई में चलने से इनकार करने वालों पर अक्सर दासता या भुखमरी आती थी।[14]

झूठे भविष्यवक्ता को यह भी अधिकार दिया गया था कि ''जितने लोग उस पशु की मूरत की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले'' (आयत 15ख)।[15] हमें उन इब्रानी युवकों का ध्यान आता है, जिन्हें नबूकदनेस्सर की मूर्ति के सामने झुकने से इनकार करने के कारण धधकती आग में फैंक दिया गया था (दानिय्येल 3)।

वह कौन था (और है)

यह पशु कौन था? यदि हम पहले पशु को रोमी साम्राज्य के रूप में पहचानने में गलत हैं,[16] तो यूहन्ना के समय में दूसरा पशु सम्राट की पूजा करने के लिए विवश करने वाला संगठन है। ब्रूस मेज़गर ने लिखा है:

> जूलियस सीज़र के बाद से रोमी सम्राट दैवीय थे, अर्थात उन्हें देवता की पदवी और अराध्य बनाया गया था, जो कि इससे पूर्व वालों को मृत्यु के बाद ही मिलता था परन्तु बाद के सम्राटों को उनके जीते जी मिलता था। ... सम्राट डोमिशियन का कहना था कि लोग उसे ''हमारा प्रभु और देवता'' कहकर सम्बोधित करें। अधिकतर नगरों में जिनके लिए यूहन्ना लिख रहा था, मन्दिर इन्हीं ''देवताओं'' के लिए बनाए गए थे, जो सच्चे परमेश्वर के निवास स्थान स्वर्ग का उपहास थे।
>
> सम्राट के समुदाय को बढ़ावा देने की यह नीति चाहे अन्ततः सम्राट की ओर से ही आई थी, परन्तु इसे लागू करने का काम स्थानीय अधिकारियों के हाथ में था। इन राजनैतिक कर्मचारियों को दूसरे पशु के प्रतिनिधि कहा जा सकता था। ...[17]

रेअ समर्स ने एक विशेष संगठन का सुझाव दिया है:

> [पृथ्वी वाले पशु] की ये सभी विशेषताएं राजकीय धर्म को लागू करने के लिए एशिया माइनर में बने ''कम्यून'' या ''कौंसिलिया'' के रूप में दूसरा पशु लगती हैं। यह एक सरकारी संगठन था जिसे राजकीय धर्म का कार्य मिला था और इसका ज़िम्मा सम्राट की मूर्ति की सब लोगों से पूजा करवाना था।[18]

झूठे भविष्यवक्ता का काम ''सम्राट की पूजा के साथ इसके पुरोहितों, इसके मन्दिरों, रोमा देवी और गद्दी पर बैठे सम्राट की मूर्तियों की पूजा करवाना था, जिसके सामने सब

लोगों के लिए प्रार्थना करना, धूप जलाना और पूजा करते रहना आवश्यक था।''[19] सम्राट ट्राजन के नाम एक पत्र में प्लाइनी ने लिखा:

> कई नामों वाला एक अनाम दस्तावेज़ आया। मैंने उन लोगों के नाम हटा दिए, जिन्होंने कहा कि वे मसीही नहीं हैं या कभी नहीं थे, और जिन्होंने मेरे सामने देवताओं से याचना की और आपकी मूर्ति के सामने शराब और धूप रखी और विशेषकर मसीह को कोसा। जो मैंने सुना है कि कोई सच्चा मसीही नहीं करेगा।[20]

प्रकाशितवाक्य वाले दो पशुओं ने मसीही लोगों पर अत्यधिक दबाव डाला।

> शाही मूर्ति के सामने धूप जलाने से इनकार करने वालों को राजनैतिक रूप से नागरिक अधिकारों से वंचित किया गया, सामाजिक रूप में उनका बहिष्कार किया गया और व्यापारिक रूप में उनसे सम्बन्ध तोड़ लिए गए। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए सामाजिक और आर्थिक समर्थन काम न आने पर और कठोर ढंगों का इस्तेमाल किया जाता। उन्हें पहाड़ों में या समुद्र के टापुओं पर मरने के लिए निष्कासित कर दिया जाता; जंगली पशुओं के सामने फैंका जाता, क्रूसों पर चढ़ाया जाता, हर उस ढंग से प्रताड़ित किया जाता, जो दुष्ट मन में आ सकते थे। इस प्रकार साम्राज्य के नागरिक और धार्मिक अधिकारी नासरी के अनुयायियों को कुचलने अर्थात कलीसिया को मिटा देने के साझे प्रयास में एक हो जाते थे।[21]

इस बात को समझें कि जहां तक रोम की बात थी इसका उद्देश्य सम्राटों के अहम को संतुष्ट करने से कहीं अधिक था: ''सम्राटों के समुदाय से ज़बर्दस्ती का भीतरी दायरा मिलता था, जिसकी साम्राज्य में कमी और आवश्यकता थी।''[22] इस बात को भी समझें कि रोमी अधिकारियों के मन में जिसकी आवश्यकता थी, वह अतर्क-संगत नहीं था। हम इस आग्रह की कल्पना कर सकते हैं कि ''देखो रोम ने तुम्हारे लिए क्या किया; उस शांति और समृद्धि पर ध्यान दें, जो तुम्हें मिली है; क्या सम्राट से बड़ा हितैषी तुम्हारा कोई और हो सकता है ? निश्चय ही कृतज्ञता के कारण तुम उसकी पूजा कर सकते हो।''[23] साफ़ कहें तो मूर्तियों की पूजा करने का इनकार करने के मसीही लोगों के हठ से अधिकारी परेशान हो गए थे।

आज लोगों को (और उन्हें भी जो अपने आप को ''मसीही'' कहते हैं) लग सकता है कि मूर्ति के आगे झुकने में कोई बुराई नहीं है, परन्तु यूहन्ना की नज़र में यह परमेश्वर की निन्दा थी। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करने को अविश्वासियों का काम बताया गया (14:9, 11; 16:2; 19:20; 20:4; 15:2 भी देखें)।[24] प्रभु तो यही चाहता है कि सब लोग ''मूर्तों से परमेश्वर की ओर फिरें, ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करें'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:9)।[25]

पृथ्वी वाले पशु को सम्राट की पूजा करने वाले संगठन के रूप में पहचानकर, क्या हम

यह मान लें कि पाठ में दी गई इन आयतों का अब हमारे लिए कोई अर्थ नहीं है ? हम में से अधिकतर लोगों को अपने देशों के अगुओं की मूर्तों के आगे झुकने की आवश्यकता नहीं है; यदि हम ''हमारा नेता हमारा ईश्वर नहीं है'' कह दें तो कोई हमें मार नहीं डालेगा! परन्तु याद रखें कि आयत 9 यह स्पष्ट करती है कि अध्याय 13 का संदेश हर युग के लिए है कि ''जिसके कान हों वह सुन ले।''

एक स्पष्ट प्रासंगिकता उन देशों के लिए है, जहां कलीसिया और राज्य धार्मिक स्वतन्त्रता को दबाने के लिए काम करते हैं। एल्बर्ट बाल्डिंगर ने सुझाव दिया था कि ''यूहन्ना वाला पृथ्वी से निकला पशु मुख्यतया कैसर की पूजा है, यह किसी भी अन्य धर्म की तरह है, जो राजनैतिक स्वार्थों के लिए सरकार द्वारा नियन्त्रित और चलाया जाता है।''[26] आम तौर पर राजनैतिक नेताओं ने सीख लिया है कि धर्म को नाश करने की कोशिश करने के बजाय उसे अपने स्वार्थी उद्देश्यों के लिए बिगाड़ना लाभदायक है।

परन्तु इससे संकेतवाद का महत्व खत्म नहीं हो जाता। पृथ्वी पर से निकलने वाले पशु का विशेष दान लोगों को भरमाने अर्थात लोगों को झूठी पूजा में लगाने की उसकी क्षमता की और है, जैसे होमेर हेली ने कहा है कि पृथ्वी से निकलने वाला पशु ''झूठी पूजा के सभी'' रूपों में है, जिसमें पोपतन्त्र और झूठे धर्म के कई और प्रबन्ध हैं।[27]

नया नियम उस गलती के बारे में जो उठने वाली थी, बहुत कुछ कहता है। यीशु ने चेतावनी दी कि ''बहुत से झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे'' (मत्ती 24:11; देखें मत्ती 7:15; 24:24; मरकुस 13:22)। पतरस ने चेतावनी दी कि ''तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करने वाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप-छिपकर करेंगे ...'' (2 पतरस 2:1)। यूहन्ना ने ''उन के विषय में'' लिखा है, ''जो तुम्हें भरमाते हैं'' (1 यूहन्ना 2:26)। दूसरे पशु की आत्मा आज भी झूठे शिक्षकों में पाई जाती है, जो संसार भर में लाखों लोगों को भरमाने का काम कर रहे हैं।

क्या झूठ सिखाने वाले शिक्षकों को आसानी से पहचाना जा सकता है ? नहीं। यह आज भी सच है कि शैतान के लोग ऐसे दिखाई देते हैं, जैसे वे हैं नहीं। ''मसीह के प्रेरित'' होने का दावा करने वालों के विषय में पौलुस ने लिखा और अपने पाठकों को चकित न होने के लिए कहा, ''क्योंकि शैतान आप ही ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। सो यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कोई बड़ी बात नहीं'' (2 कुरिन्थियों 11:14, 15क)।

झूठे शिक्षक आमतौर पर पहला प्रभाव बहुत अच्छा छोड़ते हैं। एक धार्मिक गुट अपने आपको ''मसीही'' कहलाता है, चाहे वे यीशु के परमेश्वर का पुत्र होने से इनकार करते हैं। हाल ही के वर्षों में इस संगठन ने अपने आप को परिवार पर ध्यान देने वाले दिखाने के टीवी विज्ञापन में लाखों डॉलर खर्च कर दिए। इन विज्ञापनों से परिवारों के टूटने पर चिंतित लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

यदि झूठे भविष्यवक्ता भक्ति का दिखावा कर सकते हैं तो हम उनके धोखे में आने से कैसे बच सकते हैं ? यूहन्ना ने कहा, ''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: वरन

आत्माओं को *परखो,* कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)। उन्हें कैसे परखा जाए? वचन के द्वारा। हमें चाहिए कि उनकी *शिक्षा* को वचन के द्वारा परखें कि वे क्या सिखाते हैं, न कि बिना संदेह किए उनकी हर बात को मान लें। इसके अलावा हमें उनके *जीवनों* को भी वचन के द्वारा परखना चाहिए। हम ''बालक ... जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों के, और उपदेश के, हर एक झोंके से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों'' (इफिसियों 4:14) नहीं बने रह सकते। पौलुस ने कहा है:

> ... जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट डालने, और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग ... अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी-चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं (रोमियों 16:17, 18)।

परमेश्वर के वचन के साथ पौलुस की शिक्षा को मिलाने के कारण बिरिया के लोगों की सराहना की गई थी (प्रेरितों 17:11)। ऐसी जांच से सच्चाई को शिक्षा देने वाले कभी अपमानित महसूस नहीं करते। मैं अपने सुनने वालों से कई बार सिफ़ारिश करता हूं कि ''मेरी किसी बात पर केवल इसलिए यकीन न करें कि यह मैंने कही है।'' हर बात को परमेश्वर के वचन से मिलाकर देखें।

''हे मेरे प्रिय भाइयो, धोखा न खाओ'' (याकूब 1:16)!

वह उस शक्ति के होने का दावा करता है जो उसके पास है नहीं (13:13-15)

पृथ्वी में से निकलने वाले पशु के पास ज़बर्दस्ती करने की शक्ति थी, परन्तु उसकी सबसे बड़ी सामर्थ भरमाने की उसकी क्षमता में थी। सबसे पहले तो वह छद्म-धर्म को बढ़ावा देने वाला झूठा भविष्यवक्ता था।

अध्याय 11 में असली भविष्यवक्ताओं ने असली धर्म को बढ़ावा देने के लिए असली आश्चर्यकर्म किए।[28] इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि झूठे भविष्यवक्ता ने अपने झूठे धर्म को बढ़ाने के लिए नकली आश्चर्यकर्मों का इस्तेमाल किया। अध्याय 13 कहता है कि ''वह बड़े-बड़े चिह्न दिखाता'' है (आयत 13क)। ''चिह्न'' शब्द का इस्तेमाल यूहन्ना के लेखों में अधिकतर आश्चर्यकर्मों के लिए किया गया है। पृथ्वी में से निकलने वाला पशु ''उन चिह्नों के कारण, जिन्हें उस पशु के सामने दिखाने का अधिकार उसे दिया गया था, पृथ्वी के रहने वालों[29] को भरमाता था'' (आयत 14क; देखें 19:20)।

दो विशेष चिह्नों का उल्लेख है: पहला, वह जन्तु ''मनुष्यों के साम्हने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देता था''[30] (आयत 13ख)। परमेश्वर के भविष्यवक्ता एलिय्याह ने आकाश से आग बरसाई थी (2 राजा 1:10, 12), वैसे ही झूठे भविष्यवक्ता ने स्वर्ग से आग गिराने का *दिखावा* किया। दूसरा, ''उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का

अधिकार दिया गया, कि पशु की मूरत बोलने लगे'' (प्रकाशितवाक्य 13:15क)। निर्जीव में प्राण फूंकना परमेश्वर की विशेषता है (उत्पत्ति 2:7); इसलिए झूठे भविष्यवक्ता ने ''परमेश्वर के रूप में काम करके'' लोगों को यह यकीन दिलाया कि वह मूर्ति जीवित हो गई है और बोल सकती थी।

कुछ लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि आश्चर्यकर्म करने की योग्यता (या, कम से कम आश्चर्यकर्म करने जैसा लगना) ''अपने आप में ईश्वरीयता या ईश्वरीय समर्थन का चिह्न नहीं है।''[31] पहाड़ी उपदेश में यीशु ने कहा था:

> जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुत से लोग मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से *आश्चर्यकर्म* नहीं किए? तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ (मत्ती 7:21-23)।

केवल प्रभु जानता है कि इन लोगों ने आश्चर्यकर्म किए थे भी या करने का केवल दावा किया था, परन्तु कहने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर की आज्ञा मानना आश्चर्यकर्म करने से अच्छा माना जाता है।

यीशु ने फिर चेतावनी दी कि उसके जाने के बाद, ''झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे।'' वे ''बड़े चिह्न और अद्‌भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें'' (मत्ती 24:24; मरकुस 13:22 भी देखें)।

प्राचीनकाल में इस्राएलियों को दी गई चेतावनी हमारी चर्चा में लागू होती है। व्यवस्थाविवरण 13 अध्याय में मूसा ने एक भविष्यवक्ता के उठने और लोगों को ''चिह्न या चमत्कार'' देने की सम्भावना की बात की थी (आयत 1)। परन्तु यदि वह भविष्यवक्ता कहता कि ''आओ हम पराए देवताओं के अनुयायी होकर ... उनकी पूजा करें'' (आयत 2), तो मूसा ने यह निर्देश दिया:

> तुम उस भविष्यवक्ता ... के वचन पर कभी कान न धरना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिससे यह जान ले कि ये मुझ से अपने सारे मन और अपने सारे काम के साथ प्रेम रखते हैं या नहीं? तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना और उसका भय मानना, और उसकी आज्ञाओं पर चलना, और उसका वचन मानना, और उसकी सेवा करना और उसी से लिपटे रहना। और ऐसा भविष्यवक्ता ... जो तुम को तुम्हारे उस परमेश्वर यहोवा से फेर के, ... यहोवा के मार्ग से बहकाने की बात कहने वाला ठहरेगा, ... मार डाला जाए। ... (आयतें 3-5)

''यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा'' शब्द कंपकंपी लगा देने वाले हैं। हमें 2 थिस्सलुनीकियों 2:10-12 याद आता है, जिसमें कहा गया है कि परमेश्वर उन में जो ''सत्य से प्रेम'' नहीं

रखते, ''भटका देने वाली सामर्थ को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें।'' ''भटका देने वाली सामर्थ'' वे झूठे शिक्षक होंगे जो ''शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ और अद्‌भुत काम के साथ'' आते हैं (आयत 9)।

मैं इससे अधिक ज़ोर देकर नहीं कह सकता कि सभी धार्मिक शिक्षक (जो आश्चर्यकर्म कर पाने की योग्यता होने का दावा भी करते हैं) परखे जाने चाहिए। यदि उनकी शिक्षा लोगों को परमेश्वर की सच्चाई से दूर करती है तो चाहे वे कितने भी प्रभावशाली या आकर्षित क्यों न हों, उन्हें दृढ़तापूर्वक ठुकरा दिया जाना चाहिए।

प्रकाशितवाक्य 13 वाले झूठे भविष्यवक्ता द्वारा किए ''अद्‌भुत कामों'' पर शायद आपने ध्यान नहीं दिया, जिसे मैंने ''छद्‌म-आश्चर्यकर्म'' और ''झूठे आश्चर्यकर्म'' नाम दिया है। बाइबल के अपने अध्ययन में, पहले माया दिखाने वाला और स्वभाव से संदेह करने वाला होने के कारण मेरा मानना है कि झूठा भविष्यवक्ता उस अधिकार के होने का दावा कर रहा था, जो उसके पास नहीं था।

(1) यह अविचारणीय है कि परमेश्वर दुष्ट शक्तियों को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति दे दे और उसके लोग आश्चर्यकर्म न कर पाएं-और इस बात का हर संकेत है कि नये नियम के पूरा हो जाने (अन्य शब्दों में यूहन्ना द्वारा प्रकाशितवाक्य को लिखना पूरा करने तक) तक मसीही आश्चर्यकर्मों की शक्तियां जाती रही थीं।[32]

(2) यह भविष्यवाणी की गई थी कि झूठे शिक्षक नकली आश्चर्यकर्मों का इस्तेमाल करेंगे। ''अधर्मी'' के आने की बात[33] कहकर पौलुस प्रेरित ने बताया कि उसका आना ''शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ और चिह्न, और *अद्‌भुत काम* के साथ'' होगा (2 थिस्सलुनीकियों 2:8, 9)।

(3) ''चिह्न'' यहां उस समय के (धार्मिक और अधार्मिक) कपटियों के करतबों का मानक था। उन्हें जनसाधारण को प्रभावित करने का व्यावहारिक महत्व पता नहीं था।

(4) बताया गया हर ''चिह्न'' प्राकृतिक ढंग से किया जा सकता था। उदाहरण के लिए आकाश से आग पर विचार करें: आग दिखाना हमेशा भीड़ को खींचने वाला रहा है। मेरे पास एक पुस्तक है, जिसे खोलने पर वह जल उठती है। बआल के भविष्यवक्ता कठिन परिस्थितियों में आकाश से आग नहीं बुला पाए थे (1 राजा 18), परन्तु अपने मन्दिरों में से मायावी आग *दिखाना* उनके लिए कठिन काम नहीं था। ''अदृश्य'' तार, अति ज्वलनशील घोल, मद्धम सी चमक, आग भड़काने के लिए दूर खड़ा व्यक्ति और महीन कपड़ा! बस हो गया ''चमत्कार।''

जीवित होकर बोलने वाली मूर्ति क्या थी? एक रात मैंने टीवी में देखा: एक जन लकड़ी और कपड़े का बना निर्जीव ढांचा लेकर मंच पर आया, घुटनों के बल बैठकर उससे बातें करने लगा और वह ढांचा भी उससे बात करने लगा! उस मूर्ति के जबड़े हिलते थे; उसकी आंखें घूमती थीं; उसका सिर इधर-उधर मुड़ता था; उसकी पलकें झपकती थीं। बिना होंठ हिले और किसी अन्य स्रोत से आवाज़ निकलने की बात, चकित कर देने वाली अर्थात, पेट से बोलने का कई पुस्तकों में संकेत मिलता है कि मूर्तियों के पुजारियों को इस

कला में महारत हासिल थी।

निश्चय ही हो सकता है कि बोलने वाली मूर्ति की कहानी बनाने के लिए किसी कौशल की आवश्यकता न हो। एक यात्री दल के साथ प्राचीन परगुमम में जाने पर हमें उन मूर्तियों की वेदी के खण्डहर दिखाए गए, जिसके नीचे मन्दिर के पुजारी के छिपने की जगह भी थी। बोलने वाली एक ट्यूब के द्वारा पुजारी इस प्रकार से दिखा सकता था, जैसे आवाज़ वेदी में से ही आ रही हो।

मूर्ति से बुलवाने के कई और तरीके थे और उसे जीवित दिखाने के भी कई तरीके थे। कुछ प्राचीन मूर्तियों के मन्दिरों के खण्डहरों से मिली तारों और पुलियों से यह पता चलता है कि कठपुतली वाला ढंग भी कभी-कभी अपनाया जाता था।

यदि किसी को संदेह हो कि उस समय के लोगों को ऐसे करतबों से कैसे प्रभावित किया जाता होगा, तो आप शमौन जादूगर को ही देख लें: वह ''टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरुष बताता था। और सब छोटे से बड़े तक उसे मान कर कहते थे कि यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है'' (प्रेरितों 8:9, 10)![34]

निश्चय ही आप कह सकते हैं कि ऐसी भरमाने वाली शक्ति तो पुराने जमाने में ही होती होगी! हम सोचते हैं कि इस ''जागृत'' युग में कोई ऐसे चक्कर में नहीं आएगा। काश ऐसा होता, परन्तु ऐसा है नहीं। पी. टी. बर्नम[35] ने इस सच्चाई को यह कहते हुए बताया है कि ''हर मिनट में एक दूध पीने वाला जन्म लेता है।'' उसे सच्चाई मान लेने वाले लोगों की मूर्खता पर कोई हैरानी नहीं होती।

मैं उन तरीकों से हैरान हूं, जिनसे लोगों को किसी विशेष शक्ति के होने के दावों से मूर्ख बनाया जाता है। उदाहरण के लिए, कई लोग आध्यात्मिक तथा अन्य ''आध्यात्मिक गुरुओं'' के चक्कर में फंस जाते हैं, जो ऐसा दिखाने के लिए कि उन्हें उन से अभी-अभी मिलने वाले लोगों के भविष्य की जानकारी है, कई टोटके अपनाते हैं। मैं जादू-टोने की कई बातों का और कथित ''रहस्यमयी बातों'' का उल्लेख कर सकता हूं।

विशेषकर मसीहियत के नाम पर किए जाने वाले दाव-पेंच चौंका देने वाले हैं। कई झूठे शिक्षक चमत्कार करने का, विशेषकर चंगाई के चमत्कार करने की शक्ति होने का दावा करते हैं।[36] ''चंगाई देने वाले लोग दिमाग को पढ़ने वाले'' एक पुराने दाव का इस्तेमाल करके कि ''परमेश्वर मुझे बता रहा है कि यहां उपस्थित लोगों में से किसी को पित्ते की समस्या है'' जैसी कई सामान्य बातें कहकर अस्पष्टता पैदा करके कहते हैं कि कोई अनाम व्यक्ति चंगा हो गया है। एक आसान सी चालाकी से यह पता चल सकता है कि असमान टांगें बराबर की जा सकती हैं, जबकि कोड या गुप्त इलैक्ट्रॉनिक चीज़ों के द्वारा जानकारी एक-दूसरे तक पहुंचाने के दाव अधिक विस्तृत हैं।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ मुझे और पक्का विश्वास होता गया कि सबेस्टियन ब्रैंड सही था जब उसने लिखा, ''लोगों को धोखा खाना *अच्छा लगता* है।''[37] लोग टूरिन के कफ़न को देखने के लिए इकट्ठा हो जाते हैं।[38] मूर्ति के आंसू देख हज़ारों लोग ''चकित हो जाते

हैं।''[39] लोगों द्वारा दर्शन मिलने के दावे के बाद मन्दिर बन जाते हैं। पृथ्वी से निकलने वाला पशु अपने थैले से ट्रिक निकालता रहता है।

यूहन्ना के शब्दों से लें तो यदि शैतान की उन सभी चालों को जो वह आज लोगों के साथ खेलता है ''एक-एक करके लिखा जाता, तो मैं समझता हूं कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं'' (देखें यूहन्ना 21:25)। शैतान के भरमाने के सभी तरीकों की सूची देने से भी महत्वपूर्ण बात लोगों को चौकस, बल्कि संदेह करने वाले होने और परमेश्वर के वचन के अलावा किसी भी बल्कि हर बात को नकारने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है!

अपने विषय के इस पहलू को छोड़ने से पहले, इसे जहां तक सम्भव हो व्यावहारिक बनाएं। दूसरों की ओर देखकर चकित होकर हम कह सकते हैं, ''वे इतनी आसानी से मूर्ख कैसे बन गए?'' यदि हम ईमानदार हैं तो हमें यह मानना पड़ेगा कि हर व्यक्ति को शैतान धार्मिक धोखे से ठगता है, वह दोहरी सांसारिक बातचीत से सैकड़ों लोगों को भरमाता है। हमें यह मानना पड़ेगा कि हम सभी कभी न कभी उसकी बातों में आ जाते हैं। उसके कुछ और सफल धोखे ये हैं: ''आप परमेश्वर के बिना भी अच्छा चल सकते हैं''; ''जो भी है सब *यहीं* है, कल किसने देखा है''; ''महत्व इस बात का है कि आप के पास क्या है।'' आत्मा को नष्ट करने का उसका सबसे बड़ा झूठ यह है कि ''यीशु के अलावा परमेश्वर तक जाने के मार्ग और भी हैं।'' (देखें यूहन्ना 14:6; प्रेरितों 4:12.)

हमारे अध्ययन के इस भाग का शीर्षक है ''वह उस शक्ति के होने का दावा करता है जो उसके पास है नहीं।'' शैतान आपको प्रसन्न करने के लिए, आपको अच्छा लगने के लिए, आपके जीवन को सार्थक बनाने के लिए अपने पास शक्ति होने का दावा करता है। वह झूठ बोलता है! उसके पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है। केवल परमेश्वर ही जानता है और यह वह दान है, जो परमेश्वर ने उन लोगों को दिए हैं, जिनके मन उसके साथ लगे हुए हैं।

''हे मेरे प्रिय भाइयो, धोखा न खाओ'' (याकूब 1:16)!

वह उस बात की प्रतिज्ञा करता है जो वह दे नहीं सकता (13:16-18)

हमारा पाठ पशु के विवादास्पद ''चिह्न'' पर आयत के साथ समाप्त होता है। इस भाग का आरम्भ ''और उस ने छोटे, बड़े, धनी, कंगाल, स्वतन्त्र, दास सब के दाहिने हाथ या उन के माथे पर एक-एक छाप करा दी'' से होता है (आयत 16)। (पृथ्वी से निकलने वाला पशु एक व्यक्ति पर छाप लगाते हुए का चित्र देख)।

उस ज़माने में, दासों तथा अन्य लोगों पर कई बार सिर या माथे पर चिह्न लगा दिया जाता था।[40]

> प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखे जाने के समय यदि आप रोम की मुख्य गली में से गुज़रे होते तो अपने माथे या हाथ पर सफ़ेद छाप लगे किसी व्यक्ति को अपनी ओर आते देखा होता। उसके मांस में छपे अक्षर या चित्रों से यह पता चल जाता कि वह

किसका दास या किस देवता को मानने वाला है।[41]

अपने शरीर पर ''यीशु के दागों को'' (गलातियों 6:17) लिए फिरने की बात कहते समय पौलुस के मन में यही बात होगी, जिसमें वह अपने प्रभु की सेवा करते हुए उसके दागों को अपने शरीर में लगाता है (2 कुरिन्थियों 11:23-25)।[42]

कुछ लोग 13:16, 17 वाली ''छाप'' को चिह्न के रूप में मानते हैं। मेरे पास ''द बीस्ट'' नामक ट्रेक्ट पर एक कार्टून है। पूरी पत्रिका में पशु को मानने वालों को ''666'' अंक के साथ दिखाया गया है और इसे उनके माथों पर चिपकाया गया है। ''छाप'' का सम्बन्ध खरीदने और बेचने से है (आयत 17) जिस कारण कई लोगों ने इस ''छाप'' को वाणिज्य अर्थात बैंक के अंकों, सुपर बाज़ार के गुप्त कोडों,[43] आदि में इस्तेमाल किए जाने वाले संकेत के रूप में लिया है। (द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका के कुछ लोगों का यह मानना था कि राशन पर लगी मुहरें ''पशु की छाप'' हैं।)

इनमें से कोई भी व्याख्या आरम्भिक मसीहियों के लिए किसी काम की नहीं होगी।[44] संदर्भ में पशु की ''छाप'' अध्याय 7 में पढ़ी गई परमेश्वर की ''मुहर'' की प्रतिलिपि और नकल है: (1) परमेश्वर की मुहर 1,44,000 पर लगी थी, जो ''*सभी* विश्वासियों'' का संकेत देते हुए एक सांकेतिक अंक था यानी किसी को भी छोड़ा नहीं गया था। इसी प्रकार पशु का चिह्न ''छोटे-बड़े, धनी-कंकाल, स्वतन्त्र-दास *सब*'' पर लगाया गया था अर्थात पृथ्वी के किसी भी वासी को छोड़ा नहीं गया था। (2) 1,44,000 के ''माथे पर मुहर'' लगाई गई थी (7:3) और पशु के पीछे चलने वालों ''के दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक-एक छाप'' लगी थी। (3) मुहर से इस बात का संकेत मिला था कि उद्धार पाए हुए लोग परमेश्वर के हैं, उन्हें परमेश्वर द्वारा सुरक्षित किया गया है और वे परमेश्वर के दृष्टिकोण, विशेषकर कष्ट के प्रति उसके व्यवहार के लिए उपयुक्त थे।[45] छाप लगे पृथ्वी के लोग पशु की सम्पत्ति, उसकी सुरक्षा में रहने वाले और उसके व्यवहार की नकल करने वाले लोग थे।[46] मुहर पर अध्ययन करते हुए हमने इस बात पर ज़ोर दिया था कि यह ठप्पा नहीं था और न ही यह कोई चिह्न था।

बाइबल के समयों में मुहरों का उद्देश्य अलग-अलग होता था, परन्तु अध्याय 7 वाली मुहर का उद्देश्य *सुरक्षा* बताया गया है। वैसे ही लोगों द्वारा पशु की छाप को स्वीकार कर लेने का अर्थ यह था कि पशु उनकी आवश्यकता पूरी करेगा और उन्हें सम्भालेगा। परन्तु *शैतान वह देने की प्रतिज्ञाएं करता है, जो वह दे नहीं सकता*।

परन्तु आरम्भ में ऐसा *लगा* कि पशु अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा ''कि उस [पृथ्वी वाले पशु] को छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस [समुद्र वाले पशु] पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो, और कोई लेन-देन न कर सके'' (आयत 17)। ''अंक'' को ''पशु के *नाम* या उसके नाम के *अंक* के रूप में पहचाना जाता है।'' पाठ में आगे हम ''अंक'' पर चर्चा करेंगे। याद रखें कि उस ज़माने में व्यक्ति के नाम से ही उसकी सब बातें पता चल जाती थीं। पशु के नाम वाला ''अंक'' होने का अर्थ पशु *जैसा* होना था।

महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि उस ''चिह्न'' वाले लोग ही उसे खरीद या बेच सकते थे। कुछ लोगों को लगता है कि यह व्यापार करने के लिए आवश्यक कानूनी दस्तावेज़ों को कहा गया है। पुरातत्व विज्ञान ने ''सम्राट की मूर्तिपूजा करने वालों को प्रमाण के रूप में मिले प्रमाण-पत्रों के टुकड़े दिए हैं।''[47] मैरिल सी. टैनी ने यह विचार दिया है:

> तिबरियुस से लेकर विभिन्न सम्राटों के शासन में हर प्रकार के कामकाज के दस्तावेज़ सरकारी मुहर से सील किए जाते थे, उनके बिना कोई कार्य मान्य नहीं होता था। स्वीकृति के लिए स्थानीय अधिकारियों द्वारा प्रार्थना की जाती थी, कई बार अलग-अलग नगरों के पुजारी ऐसा करते थे जो सिंहासन पर बैठे कैसर की पूजा करवाते थे।[48]

अन्य विद्वानों का मत है कि यह बहिष्कार सामान्य था: हो सकता है कि किसी मसीही के मूर्ति के सामने न झुकने पर यह बात फैल जाती थी, जिससे व्यापारी लोग उससे लेन-देन करने से मना कर देते थे। शायद विवेकी मसीही मूर्तियों की पूजा करने वालों के साथ निकट सम्बन्ध रखने वालों के साथ व्यापार करने से अपने आप को दूर ही रखते थे। आर्थिक बहिष्कार का ढंग जो भी हो,[49] मसीही लोगों और उनके परिवारों के ठण्डे भविष्य की एक तस्वीर बनाई गई है (13:17)।

इस प्रकार हम आयत 18 पर आते हैं, जिसका आरम्भ ''ज्ञान इसी में है'' शब्दों से होता है। जानकारी उन्हीं लोगों को दी जानी थी, जो इसे समझ सकते थे- जिससे बातें अलग परिप्रेक्ष्य में आ जानी थीं। बाइबल के ज्ञान की एक परिभाषा है, ''चीज़ों को ऐसे देखना जैसे परमेश्वर देखता है।''

पिछले पाठ के आरम्भ में, मैंने ध्यान दिलाया था कि हर पशु के परिचय के बाद पवित्र आत्मा ने संक्षेप में *प्रोत्साहन* की बात की। 13:9, 10 में समुद्र से निकलने वाले पशु का परिचय देने के बाद आश्वासन की बात कही गई, जबकि आयत 18 में पृथ्वी में से निकलने वाले पशु के विवरण के बाद प्रोत्साहन का संदेश दिया गया: ''ज्ञान इसी में है: जिसे बुद्धि हो, वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है, और उसका अंक छह सौ छियासठ है।''

इस आयत को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, बल्कि पूरी बाइबल में ही सबसे पेचीदा माना गया है। इस पद की सबसे प्रसिद्ध व्याख्याओं में से एक यूहन्ना gematria नामक प्रक्रिया के द्वारा किसी व्यक्ति का नाम निकालने के लिए 666 अंक का इस्तेमाल करते हुए यूहन्ना द्वारा ठहराई गई पहेली के रूप में लेना है।[50] यह एक जटिल प्रक्रिया है, इतनी जटिल कि हमें इस पर एक अलग पाठ लिखना पड़ेगा।[51] अभी के लिए इतना कहना ही काफ़ी है कि मैं मार्टिन फ्रैंज़मैन्न के साथ सहमत हूं, जिसने कहा है कि यदि यूहन्ना ने कोई पहेली डाली है तो ''किसी आधुनिक प्रयास से उस रहस्य को सुलझाना सम्भव नहीं है।''[52] इन विचारों पर ध्यान दें:

(1) प्रकाशितवाक्य में और किसी जगह अंकों का इस्तेमाल पहेली के रूप में नहीं

किया गया। तो फिर यहां ''666'' को वैसे क्यों लिया जाना चाहिए। पुस्तक में और हर जगह, अंकों को सांकेतिक रूप में लिया गया है। तो फिर ''666'' का सांकेतिक अर्थ क्यों नहीं लिया जाना चाहिए? ''अपोकलिप्स संकेतों की पुस्तक है; यह पहेलियों की पुस्तक नहीं है!''[53]

(2) प्रकाशितवाक्य का सम्पूर्ण उद्देश्य शांति देना था, परन्तु पहेली बन जाने से इससे क्या शांति मिलती, चाहे वह पहेली किसी के नाम का अनुमान लगाकर सुलझा भी ली जाती? यूहन्ना मज़ाक नहीं कर रहा था। उसका उद्देश्य उलझाना नहीं, बल्कि शांति देना था; परेशान करना नहीं, बल्कि संतुष्ट करना था; पेचीदा बनाना नहीं, बल्कि प्रोत्साहन देना था।

संदर्भ से इस तथ्य के दो सूत्र मिलते हैं कि आयत 18 का उद्देश्य मसीही लोगों को प्रोत्साहित करना था। पहला सूत्र यह है कि यह अंक ''मनुष्य का'' था। प्रकाशितवाक्य में किसी और जगह इसी अभिव्यक्ति का अनुवाद ''मनुष्य'' किया गया है (21:17)।[54] गलातियों 1:11; 3:15 तथा अन्य वचनों में इस वाक्यांश का इस्तेमाल ''सामान्य रूप में मनुष्य जाति'' के लिए किया गया है। यूहन्ना के कहने का अर्थ यह नहीं था कि ''यह किसी विशेष व्यक्ति का अंक है''; उसके कहने का अर्थ था कि ''यह अंक मनुष्य का ही है!''[55] अन्य शब्दों में पशु वाला अंक ईश्वर का या अलौकिक नहीं है। यह केवल *मनुष्य* का अंक है। कोई व्यक्ति या लोगों का समूह, कितना भी सामर्थी क्यों न हो, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने खड़ा नहीं हो सकता! (देखें 2 इतिहास 20:6.)

दूसरा सूत्र पशु को दिया गया अंक है: ''666.'' इस अंक की व्याख्या के लिए अंक ''छह'' के मूल सांकेतिक अर्थ से आरम्भ करें। अंकों के परिचय वाले पाठ में[56] हमने देखा था कि छह का अंक सात से एक कम है और ''सात'' सिद्धता का संकेत है, इसलिए ''छह'' अधूरे या बुराई का संकेत है। पुन: छह कहने का अर्थ लगभग सात ही है, इसलिए ''छह'' धोखे का भी संकेत है।

प्रकाशितवाक्य में से सिखाते हुए मैं कई बार आकृति का इस्तेमाल करता हूं: मैं अपने हाथ में सात सिक्के लेकर गिनता हूं। फिर अपने सुनने वालों को बताता हूं कि मैं अपने हाथ पीछे करके हो सकता है कि उनमें से एक सिक्का निकाल लूं या कोई भी न निकालूं। मैं अपने हाथ पीछे करके उन्हें आगे ले आता हूं, ताकि बैठे लोग सिक्कों को देख सकें। मैं सिक्कों को धीरे-धीरे हिलाता हूं, जिससे उनके लिए यह बताना कठिन हो जाए कि मेरे पास कितने सिक्के हैं, और फिर मैं उन्हें यह अनुमान लगाने के लिए कहता हूं कि मेरे हाथ में छह सिक्के हैं या सात। ऐसा मैं कई बार करता हूं, कई बार छह सिक्के लेकर और कई बार सात सिक्के लेकर। मेरे छात्र समय के गलत भाग का अनुमान लगाते हैं जिससे यह पता चलता है कि छह कितना *धोखा देने वाला* हो सकता है, जो लगभग सात जैसा ही लगता है।

अन्त में, ''छह'' अंक का इस्तेमाल असफलता की भविष्यवाणी करने के लिए किया गया, क्योंकि यह ''सात'' के जितना होना भी चाहे, तो भी ''छह'' हमेशा ''छह'' ही रहेगा। (किसी वस्तु की कीमत सात रुपये ठहरा देने पर, इसे छह रुपयों में खरीदा नहीं जा सकता।)

अब ''छह'' अंक में पाई जाने वाली धारणाओं को मिला लें। बाइबल के अनुसार

किसी बात को तीन बार दोहराने का अर्थ इसकी शक्ति बढ़ाना था। तीन बार ''छह'' बुराई और धोखे के सार को दिखाता है, परन्तु ''इसी में ज्ञान है'': यह *असफलता* का सार भी है! अन्त में, ''666'' ''असफलता पर असफलता'' को दर्शाता है।[57]

यह अंक स्पष्ट शब्दों में घोषणा करता है कि शैतान वह देने की प्रतिज्ञा करता है, जो वह कभी दे नहीं सकता! झूठा भविष्यवक्ता दिखने को मेमना लग सकता है और हो सकता है कि वह ऐसे छाप लगा दे, जैसे मेमने ने अपनी मुहर लगाई। परन्तु अन्त में वह मेमना *नहीं* है। अन्त में उसकी छाप केवल छाप है। अन्ततः जो उसके पीछे चलेंगे वे अनन्तकाल तक असुरक्षित रहेंगे।

परमेश्वर की मुहर अपने लोगों पर है,
उसकी सभी भेड़ें सुरक्षित हैं;
सभी दुष्ट परेशान हो सकते हैं,
परन्तु परमेश्वर निश्चय ही सम्भालेगा।

उनके लिए जो परमेश्वर के अपने पवित्र पुत्र में
भरोसा नहीं रखते, ऐसा नहीं होगा;
उनके हाथों और सिर पर छाप लगी होगी,
परन्तु वह उस दुष्ट की है।

फिर संसार की सबसे काली रात आएगी,
आशा की कोई किरण नहीं फूटेगी;
उसके पास आ जाओ, वह आपके लिए
परमेश्वर का आश्रय बनना चाहता है।[58]

''हे मेरे प्रिय भाइयो, धोखा न खाओ'' (याकूब 1:16)!

सारांश

इस पाठ में हमने धार्मिक रूप से भरमाए जाने पर बात की है। लोगों को धोखा खाते देख बुरा लगता है। पौलुस ने कहा था, ''किसी रीति से किसी के धोखे में न आना'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:3क)। स्वयं धोखा खाने वालों को देखकर और भी बुरा लगता है। याकूब 1:26 उस व्यक्ति की बात करता है, जो ''अपने हृदय को धोखा'' देता है, जबकि 1 यूहन्ना 1:8 ''अपने आपको धोखा'' देने वालों की बात करता है। (नीतिवचन 14:12 भी देखें।)

पौलुस ने माना कि मसीही बनने से पहले शैतान उसे धोखा देने में सफल रहा था:

> क्योंकि हम भी पहिले, निर्बुद्धि, और आज्ञा न मानने वाले, और *भ्रम में पड़े हुए,* और विभिन्न अभिलाषाओं और सुख-विलास के दासत्व में थे, और वैरभाव और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे; और घृणित थे, और एक-दूसरे से बैर रखते थे। पर जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की कृपा, और मनुष्यों पर उसकी प्रीति

प्रकट हुई। तो उसने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म से स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ, जिसे उसने हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला (तीतुस 3:3-6)।

यदि आप शैतान के धोखे में आए हैं, तो यह ठान लें कि अब उसके झांसे में नहीं आएंगे। आपकी आंखें खुल जानी चाहिए और मन जाग जाना चाहिए। हर विचार और धारणा को परमेश्वर के वचन से मिलाकर देखें। प्रभु की आज्ञा मानने का फैसला करके इसे *अभी* पूरा करें![59]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

पिछले पाठ वाले चार्ट का इस्तेमाल करें, जिसमें संक्षेप में बताया गया है कि आरम्भिक कलीसिया के समय में और आज के समय में दूसरा पशु कौन है।

सात सिक्कों वाले ढंग का इस्तेमाल करें। चाहें तो प्रभु की मुहर और पशु की छाप में अन्तर दिखाते हुए एक आसान चार्ट बना सकते हैं।

इस पाठ का शीर्षक ''झूठा भविष्यवक्ता'' भी हो सकता था। मैरिल सी. टैनी से ली गई एक संक्षिप्त रूपरेखा इस प्रकार है: (1) उसका व्यक्तित्व, (2) उसकी सामर्थ (3) उसका भाग।[60] चार्ल्स रायरी से ली गई एक और रूपरेखा यह है: (1) उसका रूप, (2) उसका लक्ष्य, (3) उसका अधिकार, (4) उसकी पीड़ा।[61]

टिप्पणियां

[1]देखें 20:10. इस तथ्य पर कि शैतान भरमाने वाला है, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''अपने शत्रु को जानें'' पाठ में जोर दिया गया। [2]19:20 भी देखें। [3]यदि इस बात का कोई महत्व है कि पशु *पृथ्वी* में से निकला तो सम्भवतया वह पृथ्वी का है न कि स्वर्ग का। (देखें यूहन्ना 3:31; याकूब 3:15.) सम्भवतया इस बात का महत्व कम है कि पहला पशु *समुद्र* में से निकला जबकि दूसरा *पृथ्वी* में से निकला। पशुओं वाले दानिय्येल के दर्शन में, पहले यह कहा गया है कि वे समुद्र में से निकले थे (दानिय्येल 7:3); फिर यह कहा गया था कि वे पृथ्वी में से निकले (दानिय्येल 7:17); दानिय्येल के दर्शन में ''समुद्र'' और ''पृथ्वी'' को अदल-बदल कर इस्तेमाल किया गया है। [4]हम यह नहीं बता सकते कि दर्शन में पशु ''पृथ्वी में से ऊपर'' कैसे आया। पृथ्वी के पशु का प्रवेश उससे जो मैंने दिखाया है कम या अधिक नाटकीय हो सकता है। मैं आपसे वही ''देखने'' की कोशिश करने के लिए कहता हूं, जो यूहन्ना ने देखा था ताकि उस दर्शन का प्रभाव आप पर वैसा ही पड़े जैसा यूहन्ना पर पड़ा था। [5]बहुत कम विवरण दिए गए हैं, जिस कारण मैंने और ब्रायन वाट्स ने अपनी कल्पनाओं का इस्तेमाल किया था। मुझे उम्मीद है कि पृथ्वी के पशु का ब्रायन का इस्तेमाल वचन की बात से मेल खाता है। [6]अजगर के *दस* (12:3) और समुद्री जीव के *दस* (13:1) सींगों के विपरीत इस पशु के केवल *दो* सींग ही थे। (''दो'' के सांकेतिक महत्व के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 47, 48 देखें।) [7]इसका संकेत देने के लिए मैंने ब्रायन से पृथ्वी के पशु

को सांप की जीभ और पूंछ लगाने के लिए कहा। पूंछ, रैटल स्नेक (विषधर सर्प विशेष जिससे चलने से खनखनाहट का शब्द होता है) की अर्थात उस सांप की है, जिससे बचपन में मैं बहुत डरता था।[8]अपने देश में धार्मिक प्रताड़ना सहने के कारण हमारे पूर्वजों ने धर्म को मानने में राज्य के हस्तक्षेप से दूर रहना चाहा। इस कारण अमेरिका के संविधान का पहला संशोधन इस प्रकार है, ''कॉन्ग्रेस किसी धर्म के संस्थान का सम्मान या उसे मानने से रोकने का कोई कानून नहीं बनाएगी। ...''[9]''उसके सामने'' पशु के आदेश का संकेत है। जब कोई नबी परमेश्वर के ''सामने'' होता था तो वह प्रभु की इच्छा पूरी करने को तैयार होता था।[10]प्रकाशितवाक्य में ''पृथ्वी के रहने वालों'' अविश्वासियों और गैर मसीहियों को कहा गया है।

[11]''प्राणघातक घाव [जो] अच्छा हो गया था'' उस पशु की पहचान का चिह्न था (13:3, 12, 14)। इस घाव के सम्बन्ध में सम्भावित व्याख्याओं के लिए, पिछला पाठ देखें।[12]अनुवादित शब्द ''मूरत'' यूनानी के eikon से लिया गया है, जिससे अंग्रेजी शब्द ''icon'' निकला है।[13]एम. राबर्ट मुल्होलैंड जूनि. *होली लिविंग इन एन अनहोली वर्ल्ड: रैवलेशन,* द फ्रांसिस एसबरी प्रैस कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: फ्रांसिस एसबरी प्रैस, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 236. [14]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''गरजती टापें'' में काले घुड़सवार पर नोट्स देखें।[15]सम्राट की मूर्ति की पूजा करने से इनकार करने वाले किसी भी मसीही को मृत्युदण्ड दिया जा *सकता* था। इतिहास बताता है कि (जैसा कि कानून के साथ हमेशा होता है) यह नियम हर जगह एक जैसा लागू नहीं किया गया; जिस कारण सब विश्वासी नहीं मरे, बेशक इसमें कोई अपवाद नहीं है कि उन्होंने कष्ट अवश्य सहा।[16]इस पुस्तक में ''देखो, सुनो और समझो'' पाठ में यूहन्ना के समय में दिखाए गए समुद्री पशु पर नोट्स देखें।[17]ब्रूस एम. मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 75. [18]रेअ समर्स, *वर्थी इज़ द लैंब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 178. समर्स ने स्रोत के रूप में ई.जी.हारडी, *क्रिश्चियनिटी एण्ड द रोमन गवर्नमेंट* (न्यू यार्क: मैकमिलन कं., 1925) दिया। कैसर और साम्राज्य दोनों की पूजा को बढ़ावा देने वाली विभिन्न परिषदों का पूरा विवरण सर विलियम रैमसे, *द लैटर्स टू द सेवन चर्चिस* (न्यूयार्क: हॉडर एण्ड स्टाउटन, 1904) में दिए गए हैं।[19]फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* भाग 2, द लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं.,1965), 11. [20]प्लिनी *एपिस्टूले,* 96, अनुवाद आर. एच. बेनटन। रोलैंड एच. बेनटन, *क्रिस्टनडम,* अंक 1 (न्यू यार्क: हार्पर एंड रो, 1966), 57 में उद्धृत। यह पत्र 111-13 ईस्वी के लगभग लिखा गया था।

[21]अल्बर्ट एच.बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्रॉम रैवलेशन: टाइमली मैसेजस फ़ॉर ट्रबल्ड हार्ट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 68. [22]मार्टिन एच. फ्रैंजमैन, *द रैवलेशन टू जॉन* (सेंट लुईस, मिज़ोरी: कनकोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1976), 96. [23]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 98. [24]आयत 4 के अनुसार, पशु (सम्राट/राजा) की पूजा अजगर (शैतान) की पूजा के बराबर ही थी। मेरे ऐसे दोस्त हैं, जो समाचार पत्र में ''शैतान की पूजा'' की बात सुनकर परेशान हो गए। जिस बात का अहसास उन्हें नहीं हुआ वह यह है कि उस प्रकार की मूर्तिपूजा में फंसने वाले हर व्यक्ति के लिए, प्रभु परमेश्वर की सेवा करने से बढ़कर और बातों को प्राथमिकता देकर ''शैतान की पूजा'' करने वाले हज़ारों हैं।[25]मूर्तिपूजा पर और जानकारी के लिए देखें रोमियों 1:21-23, 25; 1 यूहन्ना 5:21. [26]बाल्डिंगर, 69. [27] [27]होमेर हेली, *रैवलेशन : एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 293.[28]11:3-14 का अध्ययन करते समय हमने निष्कर्ष निकाला था कि दिए गए आश्चर्यकर्म परमेश्वर की सहायता और उसकी उपस्थिति का संकेत थे। परन्तु यह सत्य है कि पहली शताब्दी में, परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए वक्ता आश्चर्यकर्म कर सकते हैं (मरकुस 16:17-20)। इन आश्चर्यकर्मों से उनके द्वारा सुनाए गए वचन की पुष्टि हुई (इब्रानियों 2:3, 4)। आज, इन आश्चर्यकर्मों का *लिखा होना* उसी उद्देश्य को पूरा करता है (यूहन्ना 20:30, 31)।[29]इस वचन में झूठा भविष्यवक्ता पृथ्वी के रहने वाले अर्थात उन अविश्वासियों को भरमा ही सकता था, जिनके मन इस पृथ्वी पर लगे हुए थे। अन्य शब्दों में वह भोले-भाले लोगों को गुमराह कर सकता है परन्तु अन्य पदों में *मसीही* लोगों के भ्रमित होने की चेतावनी दी गई है, जो इस बात का संकेत है कि यदि

किसी मसीही व्यक्ति का ध्यान इस पृथ्वी पर लग जाए तो शैतान उसे भी भरमा सकता है। [30]''किसी रोमी अधिकारी और राज्य के राज्यपाल द्वारा धार्मिक पुरोहिततन्त्र के दायरे में मन्दिर में कैसर की मूर्ति समर्पित करने पर लोगों को प्रभावित करने के लिए चिह्न और चमत्कार किए जाते थे'' (एडवर्ड मायर्स, *आफ़्टर दीज़ थिंग्स आई सॉ: ए स्टडी ऑफ़ रैवलेशन* [जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1997], 241)।

[31]एडेला यारब्रो कोलिंस, *द अपोकलिप्स* (विलमिंग्टन, डेलावेयर: माइकल ग्लेज़ियर, 1979), 96. [32]1 कुरिन्थियों 13 सिखाता है कि ''सर्वसिद्ध'' के आने पर आश्चर्यकर्म करने की योग्यताएं बन्द हो जानी थीं (आयत 10)। मूल भाषा में ''सर्वसिद्ध'' भाववाच्य है और परमेश्वर की ओर से मिले प्रकाशन के ''पूर्ण'' या ''पूरा'' होने का अर्थ देता प्रतीत होता है (देखें याकूब 1:25)। प्रकाशितवाक्य लिखी जाने वाली अन्तिम पुस्तक थी, जिससे नया नियम पूरा हो गया। बेशक वितरण के लिए नये नियम की पुस्तकों को मिलाने और इकट्ठा करने में कुछ समय लग गया। आरम्भिक कलीसिया की आश्चर्यकर्म करने की योग्यता से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि नया नियम पूरा होने पर आश्चर्यकर्म होने बन्द हो गए थे। केवल प्रेरित ही आश्चर्यकर्म करने की योग्यता किसी और को आगे दे सकते थे। प्रेरितों तथा उनके जिन पर उन प्रेरितों ने हाथ रखे थे, मर जाने के बाद सचमुच के आश्चर्यकर्म करने की योग्यता आगे किसी को देने वाला कोई नहीं बचा। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* अंक (अंग्रेज़ी अंक, जनवरी 1999): 31-36 में ''होली स्प्रिट'' में ओवन ऑल्ब्रिट, ''मिरेकल्स एण्ड द होली स्प्रिट'' देखें। [33]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 3'' में पाठ ''मसीह विरोधी और प्रकाशितवाक्य'' पाठ में 2 थिस्सलुनीकियों 2:8 वाले ''अधर्मी'' पर कुछ जानकारी दी गई है। [34]बाइबल के समयों में जादूगरी पर पृष्ठभूमि की जानकारी के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में ''एक जादूगर का मन परिवर्तन'' पाठ देखें। [35]फिनियास टेलर बर्नम (1810-91) एक भड़कीला अमेरिकी सर्कस का बनाने वाला था, जो शायद बर्नम और बेली सर्कस में अपने भाग के लिए प्रसिद्ध था। [36]मेरी बातों का अर्थ यह नहीं लिया जाना चाहिए कि आज आश्चर्यकर्म से चंगाई में विश्वास करने वाले सभी लोग धोखेबाज़ हैं। करिश्माई लहर में काम करने वाले मेरे कुछ मित्र हैं, जो मेरा विश्वास है कि ईमानदार और निष्कपट हैं, यानी निष्कपटता या शुद्ध मन से गुमराह । इसके विपरीत बड़ी-बड़ी ''चंगाई सभाएं'' करने वाले मुझे धोखेबाज़ और कपटियों के अलावा और कुछ नज़र नहीं आते। यदि मैं उनका न्याय कर रहा हूं तो परमेश्वर मुझे क्षमा करे। [37]सेबस्टेन बरंट (लगभग 1458-1521), *द शिप ऑफ़ फूल्स* (1494); जॉन बार्टलेट, *बार्टलेट'ज फैमीलियर कोटेशंस*, 16वां अंक, सामा. संस्क. जस्टिन कपलन (बोस्टन: लिटिल, ब्राउन एंड कं., 1992), 135 में उद्धृत। [38]इस कफ़न पर जानकारी वाली मेरे पास एक काफ़ी मोटी फाइल है, जिसे क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद कब्र में यीशु के देह पर लपेटा माना जाता है। इसका कोई प्रमाण नहीं है कि यह दावा सही है: (1) कफ़न की तिथि के प्रयासों से यह संकेत मिलता है कि यह नये नियम के समय के बाद का है। (कॉन्सटेन्टैनी पोल [अब इस्तांबुल] में 1171 से पहले का इसका इतिहास अज्ञात है।) (2) सुसमाचार के वृत्तांतों के अनुसार यीशु को इस प्रकार के कफ़न में *नहीं* लपेटा गया था। (3) यह प्रमाणित करने का कोई तरीका नहीं है कि वह आकृति यीशु की ही है। (उस समय इस प्रकार का व्यवहार केवल उसी के साथ नहीं हुआ था।) यह विश्वास करने का हर कारण है कि परमेश्वर ने निशानी रखने की अनुमति नहीं देनी थी, जिसका इस्तेमाल पूजा के लिए किया जा सकता था। [39]जब किसी मूर्ति के आंसू निकलते या लहू बहता है तो आस-पास की हवा से ठंडी होने के कारण आए पसीने से लेकर छल तक उसकी कई व्याख्याएं होती हैं। [40]प्राचीन लेखों में विशेषकर आज्ञा न मानने वाले दासों और हारे हुए सिपाहियों का उल्लेख चिह्न लगे होने के रूप में मिलता है।

[41]मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 68. [42]कइयों का मानना है कि ''दाग'' की पृष्ठभूमि दासों पर निशान लगाने वाली नहीं बल्कि सिक्कों पर मूर्तियों या दस्तावेज़ों पर मुहरें लगाने वाली थी। [43]''गुप्त कोड'' या ''यूनिवर्सल प्रोडक्ट कोड'' किसी वस्तु के ऊपर अलग-अलग आकार में छपे सीधे कोड की शृंखला है, जिसे दुकान पर इलैक्ट्रॉनिक मशीन से ''पढ़ा'' जाता है। ''कोड'' में वस्तु का नाम, उसकी कीमत और अन्य जानकारी दी होती है। [44]अन्य विचार जो दिए जा सकते थे उन्हें भी ठुकराया जाना आवश्यक है। एक अनोखी व्याख्या

सेवंथ डे एडवेंटिस्ट वालों की है, जो यह दावा करते हैं कि पहला दिन (रविवार) आराधना करना ''पशु का चिह्न'' है। [45]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''तूफ़ान के बीच की शांति'' पाठ में 1,44,000 के *माथों* पर मुहर लगाए जाने पर टिप्पणियां देखें। [46]माथे पर चिह्न लगाना इस बात का संकेत था कि उनके *विचार* प्रभावित हुए थे; हाथ पर चिह्न लगाना इस बात का संकेत था कि उनके *काम* प्रभावित हुए थे। [47]पैक, 11. डब्ल्यू. बी. वेस्ट जूनियर के टीका में इस प्रमाण पत्र के शब्द हैं (*रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी ग्लोसिस,* संपा. बॉब प्रीचर्ड [नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997], 95). [48]टैनी, 66. [49]कुछ लेखक यह भी सोचते हैं कि मसीही लोग उपलब्ध सिक्कों का इस्तेमाल करने से इसलिए भी कतराते होंगे, क्योंकि उन्होंने सम्राट को ईश्वरीय पदों के साथ देखा था। इससे वे आर्थिक रूप से भी प्रभावित हुए होंगे। [50]प्रीमिलेनियलिस्ट लोग इस ढंग का इस्तेमाल नहीं करते क्योंकि वे किसी को भी जो यूहन्ना के समय में रहा हो पशु से नहीं मिलाना चाहते, परन्तु किसी ऐसे अलौकिक जीव से मिलाना चाहते हैं, जो भविष्य में दिखाई देगा। प्रीमिलेनियलिस्ट शिक्षा का एक विशिष्ट ढंग है ''इस आयत का क्या अर्थ है किसी को नहीं मालूम, परन्तु पशु के प्रकट होने पर यह स्पष्ट हो जाएगा।'' प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की पूरी योजना और उद्देश्य के विपरीत होने के कारण इस ढंग को ठुकराया जाना आवश्यक है।

[51]इस पुस्तक में ''जोड़ नहीं बनता!'' पाठ देखें। [52]फ्रैंजमन, 98. [53]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 273. [54]KJV में 21:17 का अनुवाद ''The measure of a man'' वैसे ही किया गया है। NASB में ''human measurements'' है। [55]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 205. कइयों का दावा है कि ''छह'' मनुष्य का अंक है, क्योंकि मनुष्य को छठे दिन बनाया गया था। [56]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' का पाठ ''यहां अजगर होंगे,'' देखें। [57]हैंड्रिक्सन, 182. [58]यह जॉन. जे. वैन. गोर्डर, *एबीसी 'स ऑफ़ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1952), 120 में एक अज्ञात कविता से लिया गया था। [59]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो स्पष्ट समझाएं कि प्रभु की बात मानने के लिए सुनने वालों को क्या करना आवश्यक है। इस पुस्तक में ''देखो, सुनो और समझो'' पाठ में टिप्पणी 50 देखें। [60]टैनी, 68-70.

[61]चार्ल्स कैल्डवैल रायरी, *रैवलेशन* (शिकागो: मूडी प्रैस 1968), 82-87.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. अध्याय 13 में अजगर का *धमकाने* वाला माध्यम कौन था? अजगर का *भरमाने* का माध्यम कौन था?
2. पृथ्वी से निकलने वाला पशु दिखने में कैसे कपटी था?
3. पृथ्वी से निकलने वाले पशु को प्रकाशितवाक्य में और कहीं क्या कहा गया है?
4. पृथ्वी से निकलने वाले पशु को कितना अधिकार दिया गया था?
5. पाठ के अनुसार, पृथ्वी से निकलने वाला पशु सताए जाने वाले मसीही लोगों के सामने कैसे आया?
6. बाइबल दृढ़ता से मूर्तियों और प्रतिमाओं की पूजा और उपासना की निंदा करती है। आपको क्या लगता है कि ऐसा क्यों है?
7. क्या शैतान आज भी हमें धोखा देने की कोशिश करता है? पाठ में उसके कुछ ढंगों की रूपरेखा दी गई है। क्या आप और ढंगों पर विचार कर सकते हैं?
8. यूहन्ना के समय में ऐसा लगा कि पृथ्वी से निकलने वाला पशु आश्चर्यकर्म कर

सकता है ? क्या आश्चर्यकर्म करने की योग्यता (या ऐसा दिखाना कि कोई आश्चर्यकर्म कर सकता है) इस बात का प्रमाण है कि वह परमेश्वर की ओर से स्वीकृत है ?

9. वचन सिखाने का दावा करने वाले सब लोगों की परख कैसे की जानी चाहिए ?
10. क्या ''पशु की छाप'' लोगों पर लगा कोई चिह्न था ? पशु की छाप की तुलना मेमने की मुहर से करें।
11. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, ''छह'' अंक का सांकेतिक अर्थ क्या है ? अंक को तीन बार दोहराने से उसका क्या महत्व बनता है ?
12. क्या शैतान ने कभी आपको भरमाया है ? आपने उस अनुभव से क्या सीखा ?

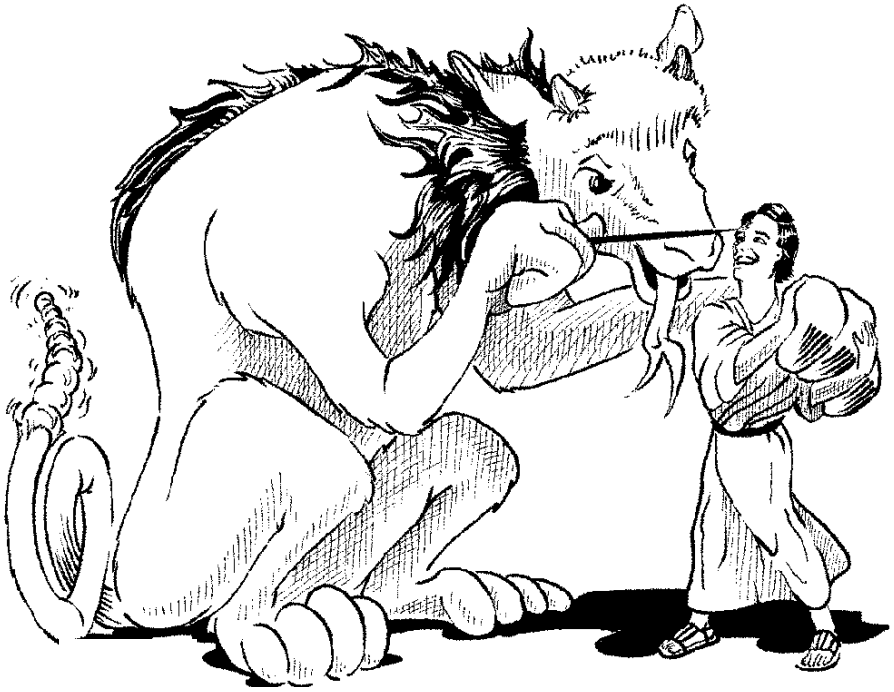

पृथ्वी से निकलने वाला पशु एक व्यक्ति पर छाप लगाते हुए (13:16)